शृंगार

सूर्यदेव सिंह 'अमर'

शृंगार

सूर्यदेव सिंह 'अमर'

मुद्रक
सन्देश प्रिंटर्स
कोर्ट रोड, सहारनपुर

प्रथम संस्करण
मार्च १९८९

मूल्य २०-०० (बीस रुपये)

प्रकाशक :
चन्द्र प्रकाशन
डी० एस० ओ० कम्पाउन्ड
कोर्ट रोड
सहारनपुर

फारमोस्ट इन्डस्ट्रीज (इ.) लि०
सहारनपुर

जिनके सहृदयता का कवि आभारी ही नही कृतज्ञ भी है।

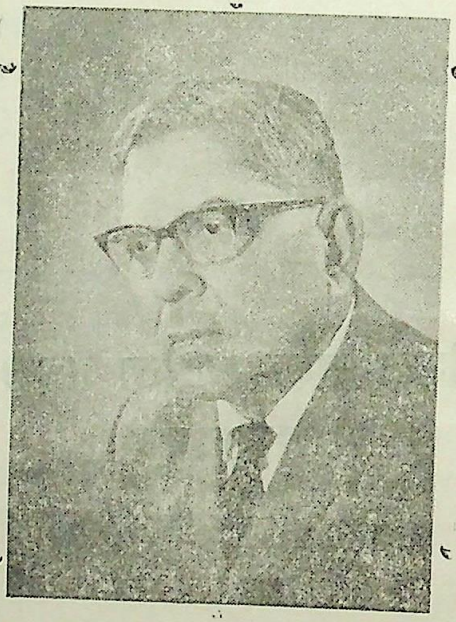

स्व. डा. आर. के. सिंह

सरस्वती पुत्र स्व० डा० आर० के० सिंह जी

बात वैसे पुरानी है । एक दिन डा० साहब अचानक फैक्ट्री फोरमोस्ट डैरी लि० कैलाशपुर, सहारनपुर आ पहुंचे । इतना महान व्यक्ति मामूली साधारण गीतकार को तलाश करता पहले तो निवास स्थान, न मिलने पर फैक्ट्री आ पहुँचे। आगमन की सूचना से चकित मैं श्रीमान की सेवा में पहुँचा, साक्षात पर प्रणाम को आशिवाद देते आपने फरमाया पहले तो एक कप चाय, फीर अपनी फैक्टी दिखाओ । मैं आज्ञा का पालन करते भईया वी० पी० केजौहरी साहब के पास गया वही उस वक्त इस फैक्ट्री के पर्सनल मैनेजर थे । नाम सुनते ही वह बाहर आये और खुशी खुशी उनके साथ पूरी फैक्ट्री घुमाया । देखने के बाद डा० साहब ने कार्य की कुशलता सफाई को सराहते बधाई दी और शुभ कामना प्रदान करते आगे जाने के लिये अपने स्वभाव के अनुसार आज्ञा ली । नम्रता के प्रतीक डा० साहब कभी भुलाये नही जा सकते ।

दो–शब्द

शृंगार पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। रचनायें पाठकों को पसन्द आ सकी तो मैं अपने को धन्य मानूंगा।

स्थानीय कवि लेखक प्रायः-मिलने पर दुलारते हैं मैं उनका आभार मानता हूँ खास कर डा० सुरेश त्यागी, राजेन्द्र राजन, धर्मपाल दत्त शर्मा का बड़ा ही कृतज्ञ हूं। उर्दु शायर के काबिले तारीफ दोस्त प्रिय भाई अनवर तावाँ सहारनपुरी का विशेषकर आभारी हूं जिन्होंने मेरी गजलों को अच्छी तरह देखा और अपने आदर प्यार और सुझाव से नवाजा।

आदरणीय भईया पंडित केदारनाथ प्रभाकर को अपने प्रशंसकों की उस टोली में पाता हुँ। जिनसे मेरे कवि को केवल उत्साह ही नही बल्कि आत्म बल को प्राण मिलता है इस सिलसिले में श्री मदन लाल अरोडा जी सम्पादक "सन्देश" का आभार मानता हूँ जिन्होंने प्रकाशन में कवि के मनोबल को बढाया।

हां एक बात सआग्रह निवेदन करना चाहूँगा "बहती गई गंगा छलकता गया जल" "कहती गई लहरें तू इन्सान चल" मेरे गीतों के संग्रह 'स्वर' में आचुलका है। गीत थोडा गलत छप गया था, इसा कारण गीत को पुनः छापना पडा, पाठकों से प्रार्थना है, कवि को क्षमा करते अन्यथा न लें।

सूर्यदेव सिंह "अमर"

डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
एम०ए०, पी-एच०डी० बी०एस०एम० पोस्ट ग्रेजुएट कालिज
प्राचार्य रुडकी–२४७६६७
बी०एस०एम० (पीजी०) कालिज
रुडकी (उ०प्र०)

बंधुवर ! ६ अक्टूबर, ८८

आपका पत्र मिला साथ ही "शृंगार" शीर्षक से गीत गजल तथा मुक्तक की त्रिवेणी मिली आभारी हूँ।

आपका कवित्व इन रचनाओं में मुखर हुआ है, यह मैं कह सकता हूँ। आज के युग में जहां कविता को पढ़ने समझने वाले गिनती के ही रह गए हो, आपका यह काव्य संग्रह आशा की किरण सा लगता है।

'मुक्तक' खण्ड में जीवन के विविध रंगों को आपने विविध रुपाकारों में ढालकर जो सफलता पाई है, वह सचमुच सराहनीय है।

"जितनी चलती सांस उतनी ही है जिन्दगी।
जो भी हां कट जाए उतनी ही है जिन्दगी।।
कलाकार केवल काया का केवट है—

लहर लहर का जितना है सम्बन्ध उतनी जिन्दगी ।।"

ऐसे मुतक्कों में, जहां चिन्तन और दर्शन का पुट आ गया है, पाठक का मन अवश्य रमेगा और वह जीवन के मर्म को समझ पायेगा, यह विश्वास मुझे है ।

'गीत और गजल' खण्ड में भी आपने जिन्दगी के अनेकानेक अनुभवों को विविध रंगों, रुपों तथा आकारों में ढालकर प्रशंसनीय कार्य किया है ।

गजल में नए-नए प्रयोगों से पाठक अवश्य चमत्कृत होंगे कहीं-कही भावों की गहराई छू लेती है--

"थोड़ा चलकर ही जो थक गई जिन्दगी ।
इतनी कमजोर क्यों हो गई जिन्दगी ।।"

मुझे विश्वास है कि आपके इस काव्य-संकलन "शृंगार" का स्वागत सहृदय पाठक अवश्य करेंगे ।

मेरी हार्दिक मंगल कामनाएं स्वीकार करें ।

आपका ही
योगेन्द्रनाथ शर्मा "अरुण"

Anju Jalan
M. A Fine. Arts

Delhi Road,
Saharanpur

'श्रगांर' सूर्य देव सिंह 'अमर' के गीत, मुक्तक, गजल का संग्रह मुझे पसन्द आया। मेरे विचारों से कोई भी व्यक्ति अपने को, अपने जीवन के उतार चढाव को, इनकी रचनाओं में पा सकता है। किसी भी मन को, छू लेने वाली बात, करने की शैली 'अमर' जी की अपनी विरासत है। जिन्दगी को नजदीक से निहारते, उसकी सच्चाई को साफ-साफ खुले शब्दों में पेश करते हैं। श्रगांर पाठकों को अपने जीवन के निकट मिलेगा सन्तुष्टी प्रदान करेगा, कवि को आदर प्रदान करायेगा। ये मेरा विश्वास है।

हार्दिक शुभ-कामनाओं के साथ।

अन्जु जालान

एक समीक्षा

कवि 'अमर' से मेरा परिचय उनकी दो कविता-पुस्तकों के माध्यम से है। एक 'स्वर', दूसरी का नाम श्रगांर है। इस दूसरी के विषय में कुछ लिखने का अनुरोध उन्होंने मुझसे किया है। नीचे की पंक्तियां उक्त अनुरोध का परिणाम है।

पुस्तक दो हिस्सों में है, 'मुक्तक' तथा गीत व गजल'।

कविता भावुकता की बेटी है। मानव एक पशु है। 'काम' और 'हिंसा' मानव-पशु के स्वभाव हैं। सांसारिक विजय उन मानव - पशुओं के हिस्से में आती रही है जो इन प्रवृत्तियों में अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों से ज्यादा पुष्ट और मुखर होते हैं, इन प्रवृत्तियों में बहिर्मुख होते हैं। लेकिन कुछ मानव पशुओं में 'काम' और 'हिन्सा' अन्तर्मुखी होती है या हो जाती है। संसार में ये मानव कमजोर दिखायी पड़ते हैं, लेकिन बाह्य संसार में असफल रहते हुए वे अन्तर के संसार में सफल होते हैं। इस श्रेणी में आते हैं कवि, लेखक, कलाकार, सन्त और आध्यात्मिक मानव। मानव जीवन में एक तीसरा तत्व है बुद्धि पिछले लगभग तीन-चार सौ वर्षो में इस तीसरे तत्व का महत्व सर्वोपरि हो गया है। उपर्युक्त दोनों श्रेणियों के वे ही मानव आज सफल हो सकते हैं जो इस तीसरे तत्व से भी सम्पन्न हों बुद्धिमान कवि या कलाकार वाह्य संसार को भी काफी प्रभावित करते हैं। हालाकि ऐसा कम होता है।

कवि के बुद्धिमान होने के क्या लक्षण है? संवेगों (emotions) की सही पहचान और उनको उपयुक्त शब्द देना। संवेग मानव व्यक्ति में कौन-कौन से लक्षण पैदा करते हैं, मानव व्यक्ति उससे किस तरह परिचालित होता है, इनका सूक्ष्म निराक्षण कवि और कलाकार को समर्थ बनाता है। भारतीय साहित्य में इनका विशद वर्णन है। जैसे भाव, अनुभाव और विभाग का वर्णन। लेकिन भारतीय काव्य-शास्त्र आज के युग में पूरी तरह से प्रासंगिक नहीं रह गया है। वह कर्मकांड बद्ध होकर रह गया है। नये युग में व्यक्ति के भाव, अनुभाव और विभाव में जो परिवर्तन हुए हैं, उनके साथ उक्त शास्त्र चल नहीं पाया है।

'अमर' के मुक्तकों एवं गीत-गजलों में नसीहत खासी मात्रा में है। जैसे पृष्ठ २० के तीनों मुक्तकों में नसीहत है। पृष्ठ २३ के प्रथम दो मुक्तकों में नसीहत है। पृष्ठ २४ के अन्तिम दो मुक्तकों में नसीहत है। पृष्ठ २७ के प्रथम और अन्तिम मुक्तक में नसीहत है। ये उदाहण मात्र है। वैसे अन्य कई मुक्तकों में भी नसीहते हैं। पृष्ठ ७६ पर मुद्रित गीत में भी नसीहत है। कुछ नसीहते कलात्मक बन पड़ी हैं। जैसे—

(क) 'आँसू अगर आए·····—·····सोचिए नहीं"।
(पृष्ठ २४)

(ख) 'रात का वक्त है····· ·· रात का वक्त है।"
(पृष्ठ ७६)

'अमर' में कहीं-कहीं दार्शनिकता के भी दर्शन होते हैं। दार्शनिकता भी मनोवैज्ञानिक दार्शनिकता। जैसे पृष्ठ ७३ पर मुद्रित गीत। अनगिनत लोगों के बीच..... पुनः तलाशना अपने को।"

व्यक्ति 'अमर' जिस वर्ग से आए हैं उस वर्ग के भावुक व्यक्ति की जो दुर्दशा इस अर्थ-प्रधान समाज में होती है उसके भी चित्र उनकी रचनाओं में मिलते हैं। वह व्यक्ति भक्कड़ किस्म का हो जाता है। और नसीहत देने लगता है। उदाहरणर्थ पृष्ठ ४४ पर मुद्रित यह गीत—

"मैं तो चला गांव को अपने
नगरी वाले शहर संभालो।
... ...
... ...
काम आयेगा मिटने पर भी
मन को प्रिय संभालो।"

व्यक्ति 'अमर' विफल प्रेमी है इसलिए कवि अमर' के प्रेम मुक्तक और प्रेम गीत/प्रेम-गजल दर्द से सराबोर है। जैसा कि अक्सर कवियों के साथ होता है ये अपने प्रिय को भूल नहीं पाये और बराबर उसी को संबोधित करके अपने दिल की बातें अपनी रचनाओं में कहते रहते हैं।

अन्त में, 'अमर' (व्यक्ति ओर कवि दोनों) को एक सुझाव चाहे प्रणय का क्षेत्र हो, चाहे कविता का, सफलता ही श्रेय है, प्रेम है और इसलिए वरणीय है। इति।

—प्रकाश नारायण राय 'मुक्त'
हाल मुकाम, सहारनपुर (उ०प्र०)

दिनांक :
२०-२१ अक्टूबर, १९८८

Phone : Office 7793, 7794
Resi. 7867

डा० पी० के० जैन
एम० पी० मैनेजर

फोरमोस्ट इण्डस्ट्रीज (ई०) लि०
पी० बाक्स १०३
सहारनपुर

'सूर्यदेव' ने रच दिया, काव्यमुक्त 'श्रंगार',
विद्यमान इसमें किये मुक्तक, गजल, विचार ।
मुक्तक, गजल विचार, गीत भी इसमें डाले,
'अमर' बनेगी उनकी यह कृति 'दीप' उजाले ।।

शुभ कामनाओं सहित

डा० प्रदीप जैन "दीप"
प्रबन्धक 'इन्डाना'
सहारनपुर

डा० महेन्द्र धींगडा
धींगडा निवास
वीर नगर, सहारनपुर

अभिव्यक्ति की मानव सुलभ तृष्णा अमर जी की कविताओं में बड़ी मार्मिकता के साथ व्यक्त हुई है। मानव जीवन की सामान्य और विरीष्ट अनुभूतियां उनकी काव्य-पंक्तियों में साकार हुई है। जीवन और समाज को जिस रुप में उन्होंने देखा है, कहीं-कहीं वह बोध के स्तर पर ही अमर होकर रह गया है। भाषा एवं भाव की सरलता में अमर जी की असीम संभावनाएं छिपी हैं। इस संकलन से आशा बंधती है कि भविष्य में काव्य जगत को कवि की सुन्दर और मार्मिक कृतियां मिलेगी।

हार्दिक शुभ-कामनाओं के साथ!

—महेन्द्र धींगडा

अशोक कुमार शर्मा
कार्मिक प्रबंधक

फोरमोस्ट इण्डस्ट्रीज (ई०)लि०
सहारनपुर

परिस्थितियां जो भी हों मानव कठिनाइयों को झेलता आगे बढ़ता चला जाये तो उसी का नाम जीवन है कविवर अमर आज प्रायः बीस बर्ष से हमारे सम्पर्क में है कार्यरत् रहते हिन्दी की सेवा, जीवन को सकुशल चलाते, परिस्थितियां चाहे जैसी हो, उनपर कुशलता की छाप देते, अग्रसर हैं। इनकी रचनाओं में जीवन के उतार चढाव का विशेष छाप मिलता है। अमर जी ने निःसंदेह जिन्दगी को बहुत नजदीक से देखा है जिसे अपनी रचनाओं में ढाल कर युग के सामने प्रस्तुत किया है। यह सत्य है, रचनायें पाठक को कुछ देती है बोझ नहीं बनती।

मैं कवि की सफलता की कामना करता हूं। आशा है कि प्रस्तुत अंक 'श्रृंगार' सबको पसन्द आयेगा। हार्दिक शुभ-कामनाओं के साथ।

१५ अप्रैल १९८९

अशोक कुमार शर्मा

मदन लाल अरोरा
'साहित्यरत्न'

बी-१५४, आवास विकास कालोनी
दिल्ली रोड़, सहारनपुर-२४७००१
फोन : ६४७६

भाषा चाहे जो भी हो, उसने अपने पनपने को साहित्यकार पैदा किये और साहित्यकारों ने अपनी शैली में चाहे वह गद्य हो या पद्य, के माध्यम से उसकी सेवा की, सृजन किया। मेरे विचार से साहित्यकार तो सृष्टिकार का दूसरा रुप ही तो होता है।

यहां बात श्री 'अमर जी' के 'श्रंगार' से है। जहां तक मुझे देखने और पढ़ने को मिला, मैंने अनुभव किया कि इस रचना में जीवन के प्रत्येक क्षण को बड़ी गम्भीरता से सोचने का प्रयास करके श्री 'अमर' ने 'श्रंगार' के माध्यम से हम सबके सामने पहुँचने की चेष्टा की।

मेरे विचार से तो कोई पंक्ति ऐसी नहीं मिली जिसका जीवन से सम्बन्ध न हो। ऐसी अवस्था में पाठक को कुछ मिलेगा ही, ऐसा मेरा विश्वास है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित—

दिनांक : १६-२-८९

मुक्तक

केवल कागज का फूल आज का आदमी,
बिना नदी का कूल आज का आदमी
रोता है इन्सान आज दिन चर्या पर,
कितनी बड़ी है भूल आज का आदमी

हँस्ते, हस्ते रो देता है आदमी,
पाकर जब कुछ खो देता है आदमी।
पता नहीं हो जिसे कहानी आज की
वह स्वयं कथानक हो लेता है आदमी

जितनी चलती सांस उतनी ही है जिन्दगी,
जो भी हाँ कट जाये उतनी ही है जिन्दगी।
कलाकार केवल काया का केवट है,
लहर लहर का जितना है सम्बन्ध उतनी जिन्दगी

नेहरू के नाम पर बाजार को बसा लो तुम
गाँधी के नाम पर सड़क को सजा लो तुम
धर्म के नाम पर इन्सान को लडालो तुम,
अपने विचारों की खिचड़ी पकालो तुम.
इससे कुछ होता नहीं इससे कुछ बनता नहीं,
खोखले छरौन्दे में कोई भी रहता नहीं,
जीवन का जीना है जीने को चढ़ना है,
उनके आदर्शों को मन पर जमालो तुम,

यही वह रंग है जो खून से मिल जाता है,
कोई एक ढंग ही जनून बन जाता है।
तुम खुदा के लिये इतना खोये न रहो,
तलाश खुद ही सकून सा बन जाता है

भटके मुसाफिर को रास्ता दिखा देना,
भूले बिसरों को याद कुछ दिला देना,
पुन्य का काम नहीं प्रणय का प्राण भी है,
रास्ता चलते को पानी का पिला देना।

मुक्तक

केवल कागज का फूल आज का आदमी,
बिना नदी का कूल आज का आदमी
रोता है इन्सान आज दिन चर्या पर,
कितनी बड़ी है भूल आज का आदमी

हँस्ते, हस्ते रो देता है आदमी,
पाकर जब कुछ खो देता है आदमी।
पता नहीं हो जिसे कहानी आज की
वह स्वयं कथानक हो लेता है आदमी

जितनी चलती सांस उतनी ही है जिन्दगी,
जो भी हाँ कट जाये उतनी ही है जिन्दगी।
कलाकार केवल काया का केवट है,
लहर लहर का जितना है सम्बन्ध उतनी जिन्दगी

नेहरू के नाम पर बाजार को बसा लो तुम
गाँधी के नाम पर सड़क को सजा लो तुम
धर्म के नाम पर इन्सान को लडालो तुम,
अपने विचारों की खिचड़ी पकालो तुम.
इससे कुछ होता नहीं इससे कुछ बनता नहीं,
खोखले छरौन्दे में कोई भी रहता नहीं,
जीवन का जीना है जीने को चढ़ना है,
उनके आदर्शों को मन पर जमालो तुम,

यही वह रंग है जो खून से मिल जाता है,
कोई एक ढंग ही जनून बन जाता है।
तुम खुदा के लिये इतना खोये न रहो,
तलाश खुद ही सकून सा बन जाता है

भटके मुसाफिर को रास्ता दिखा देना,
भूले बिसरों को याद कुछ दिला देना,
पुन्य का काम नहीं प्रणय का प्राण भी है,
रास्ता चलते को पानी का पिला देना।

घर के पास कोई पेड़ भी लगा लीजै,
खेत के चारों तरफ मेड़ भी बना दीजै,
हो सके कोई एक पेड़ बबूल का हो;
चैन में खोंये नहीं चुभन को जगह दीजै ।

नदियों में पानी आ जाना
चिन्ह प्रिय बरसात का,
आंख का काजल ओठ पे आये,
चिन्ह प्रिय है रात का !
उड़ता आंचल माथे आये,
प्रिय चिन्ह अहवात का ।
मातम में भी गरभा करना,
यह है चिन्ह गुजरात का ।
यह परिचय केवल परिचय है
महिमा के विश्वास का ।
जिस के पद चिन्हों पर अब भी,
चिन्ह मिला है आस का ।
कर्म योग की प्रिय साधना जो न करे,
नही बहुरिया करे आसरा सास का ।

हर दरवाजे दिखा दिये जो,
मेरे घर से दूर थे ।
हर उससे था मिला दिया,
जो अपने मद में चूर थे ।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम,
दिशा दिशा से मेरा परिचय ।
कहा चलो मन स्वयम,
अकेले संकेतों के नूर से ।

आदमी हो आदमी को
आदमी ही रहने दो ।
भावना की लहरों में,
यूँही नहीं बहने दो ।
देखते हो सामने कुछ,
क्षितिज सा है बना हुआ ।
दिनकर की दिन चर्या,
साँझ को ही कहने दो ।

रास्ते जैसे हों रास्ते हैं
वास्ते जैसे हों वास्ते हैं ।
पहचान लो उन्हें देख अपने को,
आस्थे जैसे हो आस्थे हैं,

एक बन्धन तोड़ के नये में समाजाना,
बातों ही बातों में भूले को पा जाना,
पाकर के खो आना खोकर के पा जाना,
कितना सरल है प्रिय बन्धन में आ जाना ।

बसन्त का मौसम और मैं,
रंगीन मौसम और मैं ।
संस्कारों के आज संगम पर
लाखों लहरें और मैं ।

सतरंगी चादर और मैं,
माथे पर गागर और मैं।
कंकरी मार किसने फोड़ दिया,
भींज गयो आंचर और मैं।

आंसू अगर आये तो उसे रोकिये नहीं,
होंठों पर आई बात कभी टोकिये नहीं,
चांद भी आ जाता है बादल के बीच में,
चूक जाये वक्त तो फिर, सोचिये नहीं।

गारे मिट्टी से दीवार चुना लेना तुम,
घर से सट कर घर बना लेना तुम।
आदमी हो आदमी के वास्ते,
बात मंजिल की प्रिय उनको बता देना तुम।

घर के पास कोई पेड़ भी लगा लीजै,
खेत के चारों तरफ मेड़ भी बना दीजै,
हो सके कोई एक पेड़ बबूल का हो;
चैन में खोंये नहीं चुभन को जगह दीजै ।

नदियों में पानी आ जाना
चिन्ह प्रिय बरसात का,
आंख का काजल ओठ पे आये,
चिन्ह प्रिय है रात का !
उड़ता आंचल माथे आये,
प्रिय चिन्ह अहवात का ।
मातम में भी गरमा करना,
यह है चिन्ह गुजरात का ।
यह परिचय केवल परिचय है
महिमा के विश्वास का ।
जिस के पद चिन्हों पर अब भी,
चिन्ह मिला है आस का ।
कर्म योग की प्रिय साधना जो न करे,
नही बहुरिया करे आसरा सास का ।

हर दरवाजे दिखा दिये जो,
मेरे घर से दूर थे ।
हर उससे था मिला दिया,
जो अपने मद में चूर थे ।
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम,
दिशा दिशा से मेरा परिचय ।
कहा चलो मन स्वयम,
अकेले संकेतों के नूर से ।

आदमी हो आदमी को
आदमी ही रहने दो ।
भावना की लहरों में,
यूँही नहीं बहने दो ।
देखते हो सामने कुछ,
क्षितिज सा है बना हुआ ।
दिनकर की दिन चर्या,
साँझ को ही कहने दो ।

रास्ते जैसे हों रास्ते हैं
वास्ते जैसे हों वास्ते हैं ।
पहचान लो उन्हें देख अपने को,
आस्थे जैसे हो आस्थे हैं,

एक बन्धन तोड़ के नये में समाजाना,
बातों ही बातों में भूले को पा जाना,
पाकर के खो आना खोकर के पा जाना,
कितना सरल है प्रिय बन्धन में आ जाना ।

बसन्त का मौसम और मैं,
रंगीन मौसम और मैं ।
संस्कारों के आज संगम पर
लाखों लहरें और मैं ।

सतरंगी चादर और मैं,
माथे पर गागर और मैं।
कंकरी मार किसने फोड़ दिया,
भींज गयो आंचर और मैं।

आंसू अगर आये तो उसे रोकिये नहीं,
होंठों पर आई बात कभी टोकिये नहीं,
चांद भी आ जाता है बादल के बीच में,
चूक जाये वक्त तो फिर, सोचिये नहीं।

गारे मिट्टी से दीवार चुना लेना तुम,
घर से सट कर घर बना लेना तुम।
आदमी हो आदमी के वास्ते,
बात मंजिल की प्रिय उनको बता देना तुम।

घर जैसे घर वाले होते,
वर जैसे वर वाले होते ।
पूरब पश्चिम के चक्कर में,
घर में न ताले होते ।

कभी न बुझता वह चिराग
लगी न रहती ऐसी आग
नाते रिश्ते की बातों का,
कभी न डस्ता दम्भ नाग ।

कौन जाने किसके घर कब कौन आता है
जाने अनजाने में अपना कह जाता है
मैं भी खड़ा हूँ उसी की बगीची में,
आकर जहां से कोई नहीं जाता है ।

कौन पराया कौन है अपना,
यह मुझ को मालूम नहीं ।
किस का पूर्ण बने सपना,
यह मुझको मालूम नहीं ।
तुम भी मेरे साथ चलो तो,
चलने वाली बात बने ।
कितना और पड़ेगा तपना,
यह मुझको मालूम नहीं ।

खैर एक बार और चान्द को आजाने दो,
नदिया का पानी फिर से भर जाने दो ।
पानी में अपनी परछाई निहार यार,
गोरिया को अपने में डूब जाने दे ।

पत्थर मारने वालो प्यार को समझो ,
आदमी को नहीं यार को समझो ।
तुम जहां खड़े हों वह किनारा नहीं है,
फिर भी किनारे के आधार को समझो ।

जिसको मिली न अपनी मंजिल,
वह औरों को राह दिखायें ।
बात ठीक ऐसी है जैसे,
सपने में कोई सीख सिखाये ।

बे वजह वजह की वजह न बनो ,
भ्रष्ट समन्दर की तुम सतह न बनो ।
जिन्दगी मिली है इसे जीलो अब ,
अपने जीवन की तुम कलह न बनो ।

आम है अमरस बना पीलो,
काम को कमरस बता जीलो।
कोई यदि आये कहने या सुनने कुछ,
कुछ मत कहो जुबान को सी लो।

धरा खाली नहीं जो,
आसमां के तारे देखूं।
उठने गिरने को है तकदीर,
क्यों पारे देखूं।
माना मानसरोवर से है,
लाखों झील यहां।
मछलियां एक में तैरें,
तो क्यों सारे देखूं।

हर सांस जिन्दगी है एक,
हर नई आस जिन्दगी है एक।
क्या कहूँ किस से कहूं,
तू है जब साथ जिन्दगी है एक।

मैं तो चला मगर मन मेरा ,
सदा तुम्हारे साथ रहेगा ।
इस दुनियां में जहां रहूं ,
पर इस धरती का हाथ रहेगा ।

तेरे दिये स्नेह का सम्बल,
मुझको बड़ा सहारा देंगे ।
अपनापन के प्रणय राग में,
सुर प्यार का साथ रहेगा ।

इस धरती पर पैदा लाखों राम हुये,
और करोड़ों मनुज नाम को श्याम हुये ।
किन्तु दया के मुर्ती रूप दशरथ न हुये,
और न इस धरती पर प्यारे नन्द गांव से धाम हुये ।

तो ऐसा तुम करो कि अपने पर ही दया करो,
स्वयम आत्मा से मिलकर अपने से मया करो ।
मया भई ही दे पायेगी राम तुम्हें,
उसी नेह से भ्रष्टकार के काम हुए ।

चलो चलें हम भी बस जायें,
वरसाना के गांव में
राधा कृष्ण जहां मिलते हैं
उस कदम्ब की छांव में।
अब तक गरिमा बनी हुई है,
पद चिन्हों के ठांव की।
देखो ठुमक रहे हैं बालक,
व्रज भाषा के नाव में।

दोसीजा दोसीजा बातें।
रात रात बेबात की बातें।
यह कैसा हंगामा प्यारे,
बे मौसम बरसात की रातें।
वे मानी के भी मानी है,
बे मानी बेमानी कैसा।
हर जानिब है जान की बाजी,
कहीं धरम तो जात की बातें।

किस्सा तो किस्सा ही रहेगा,
तुम किस्से का जिक्र न करना,
बनी है दुनियां मिट जायेगी,
बनने मिटने का फिक्र न करना,

मुंह में चूना पोत के प्यारे,
नाटक के तुम पात्र रहो ।
सच्चाई की परछाई से,
सटना मत तुम बिखर के रहना ।

पत्ते डोल कर हवा दे गये,
फुसुर फुसुर जाने क्या, आपस में कह गये
पुरवाई आइ पैर तब खिसक गये,
जेठ की दुपहरी में तापस मन रह गये

सतरंगी चादर में एक रंग मेरा है,
जीवन के रस्ते का अलग ढंग मेरा है।
चलते जो कट जाये लग जाये मंजिल से
पल से पहर से ऐसा जंग मेरा है ।

बे समझे लोग और मैं,
समझदार समझे और मैं ।
सूझ बूझ ऐसी की समझे नहीं,
दानेदार समझें और मैं ।

पानी गर बरसे तो मैं भी कजरी गाऊं,
नेह अगर उमड़े वापस बदरी लाऊं,
श्रींगार से ही हर सिंगार खिलता है,
तुम गर आजाओ तो अपनी सजरी लाऊं ।

बे परदा बेपरदा बातें, यह कैसी बेबात की बातें,
बात की रंगत चेहरे पर आ, कर देती है सौत की रातें,
परदे में रहने वालों सा, तुम भी परदा करना सीखो
सदा सुहागन जैसी जैसी हँसा करेंगी सारी रातें

दरवाजा है कीचड़ कीचड़,
अपने कदम बचा के रखना।
आगे गये जो पड़े हुये हैं,
जामे जहर है बचा के चखना।
होठ जलेगा दिल उबलेगा,
पंण्डित का मन पंण्डित पंण्डित।
मुल्ला की बातों में आके,
तुम अपने पर जुल्म न करना।

काली नदी के तट पर बसा हुआ शहर,
आदमी के भीड़ में खोया हुआ नगर।
कोई तो आके इतना मुनादी यहाँ कर दे,
पैदा न करना आदमी फैली है एक जहर।

गंगा के पानी में,
गन्दा नहीं फेंको तुम,
जमना की लहरों पर,
फंदा नहीं फेंको तुम ।
धर्म को निछावर है,
इसका बहता पानी,
नौका में बैठ कर.
बन्दा नहीं फेंको तुम ।

इस चौराहे के पास एक चौराहा,
इस आदमी के पैर के पास दोराहा ।
आदमी थक गया चलते चलते
लेकिन है बरकरार दोराहा चौराहा ।

कस्म को खाके रस्म को पीने दो
छेड़ो न और मुझे जीवन को जीने दो ।
केवल समझाने से कोई नहीं समझेगा.
फटे पड़े चिथड़ों को और जरा सीने दो ।

सीधे रस्ते चलो,
एक रास्ता मिल जायेगा ।
दिल न भटकेगा अरमान,
खिल जायेगा ।
जिन्दगी जिन्दा दिली से,
बढ़े आगे आगे,
नेह के डोर से सँसार ही,
सिल जायेगा ।

खबर मिले तो तुम भी आ जाना ।
पढ़े जो गीत उसको गाजाना ।
गरीब जान के मुझको प्रिय न ठुकराना ।
मेरे नसीब को मुझपे तुम चढ़ा जाना ।

इतनी बड़ी कतार शरातियों की है
क्या यही कतार खराबियों की है।
बहुत बड़ा हुनर है पीना पिलाना,
यह देन या तहजीब नवाबियों की है।

पुर्णिमा के दिन
चन्द्रमा का गंगा की लहरों पर,
तैरना मचलना,
और जिसे, किनारे खड़े, आदमी का देखना,
और यह सोचना,
धरती वालों से तो,
आसमां वाले भाग्यशाली हैं

मुंह को ढ़क लो प्रिय तुम चादर से,
पहले मुंह धोलो पानी के गंगा से
फिर ख्यालों के समन्द्र में डूब जाना तुम,
लेकिन वचन प्रिय उस अथाह सागर से ।

कितना है रंगीन जमाना देखा कुछ,
होठों पर है एक फसाना देखा कुछ ।
कितना है बेताब वरहम का बालक,
गुल ही गुलजार बड़ा ना देखा कुछ ।

यह तो दीवानगी पे दाग सा है,
और परवानगी पे आग सा है ।
तेरे उलझे हुये गेसू की कसम,
तेरा रोना भी एक राग सा है ।

बिरह के आग में जलने वालो,
चलते चलते अरे मिटने वालो ।
अपने जीवन का इतिहास बताकर जाना,
फटे पूरानों को सिलने वालो ।

शराब पीके गर समझा तो क्या समझा,
हवस के साज से उलझा तो क्या उलझा ।
जिन्दगी चीज समझने और उलझने के लिये,
सिलके गर पहना तो क्या पहना ।

राहों को अपने रास्ते पर जाने दो,
अपने किये को अपना फल पाने दो ।
और नहीं कोई तो खुद का हो जाने दो,
करती प्रतिभा कोइआ वन जाने दो ।

दिल की बात किसी को न कहो,
हर किसी छांव के नीचे न रहो।
गम के घूंट पी लो मगर सहो न दरद,
चीख के दूर करो यार बस घुटन न सहो।

आंचल से हवा कर चराग का बुझा देना,
बदल के बात किसी राज का बता देना,
उतना ही बुरा है जितना बुरा बुरा;
जैसे झोपड़ पट्टी में आग का लगा देना।

गुनाह का प्रिय गुमनाम असर होता है,
हृदय के जोश का कुछ ऐसा कहर होता है।
आदमी कूद ही पड़ता है उस समन्दर में,
जिसकी लहरों में बदनाम वसर होता है।

रास्ते की नजर में हर एक राहगीर सा है,
जब तक वह ठीक तब तक बेनजीर सा हैं ।
जब भी बदलाव समाया है उसकी तातेयत में,
फौरन वह रस्ते की नजरों में एक हकीर सा है ।

आदमी हो आदमी सा जीना सीखो,
शराब को भी करीने से पीना सीखो ।
यह तो बेहतर है ऐब कोई साथ न हो,
चले कुछ और गुदड़ी बनो यूं सीना सीखो ।

रूह होती है अमर जिन्दगी जीते जीते,
और जहर बे असर होता है पीते पीते ।
आदमी दन्फ तब कर देता है सारे हकूक,
क्योंकि दम होता नहीं चादर में सीते सीते ।

गीत

व

गजल

पंछी पंख पसारे उड़ना,

ठौर अनेकों एक ठिकाना,
मन मानी मत उड़ते जाना ।
सबसे बड़ी है मन की बाधा,
पंख पसारे गीत न गाना ।

बाधाओं के बांध पर रहना,
पंछी पंख पसारे उड़ना ।

रैन बसेरा की लालच में,
मन का चैन नहीं खो देना,
साहस मन से पंख पसा,
आंगन आंगन तुम उड़ लेना ।

व्यथा नहीं औरों से कहना,
पंछी पंख पसारे उड़ना

चार फूल हैं चार दिशायें,
इसी कूल पर सभी विधायें
बंधन की मर्यादा अपनी,
कैसे प्रिय की बात छुपायें ।

अपनी बात न उनसे कहना ।
पंछी पंख पसारे उड़ना ।

मैं तो चला गांव को अपने
नगरी वाले शहर संभालो ।

धरती तेरी तुझे मुबारक,
कोठे घर अम्बारे ।
दो गज की मोरे साथ लुगरिया,
रेशम मखमल थारे ।

झूठ सत्य की मोटरी तेरी,
उजड़े डगर बसा लो ।

जीवन भर का संचय संचय,
रह न सका जब संचय,
बिखर गया एक क्षण में प्यारे,
धरा धराया संजय ।

मन का देव पूज के अपने
लुटता नगर बचा लो ।

चान्दी के मन्दिर में प्यारे,
सोने का भगवान सजा लो ।
मिट्टी के इस तन में अपने,
हीरे सा इमान बसालो ।

काम आयेगा मिटने पर भी
मन को प्रिय संभालो ।

धीरे से मन भर भर जाये ।

कोमल मन कलियों का गुच्छा,
किस से पूछूं कौन है सुच्चा ।
प्रीत बहारों के आगन में,
खड़ा कहे मेरे मन को लुच्चा ।

हवा बगल से सरसर जाये ।
धीरे से मन भर भर जाये ।

आज चान्दनी रात तुम्हारी,
सब कुछ तेरा बात हमारी ।
मन का चादर ओढ़ के देखो,
बोझल बोझल भारी भारी ।

उमड़े बादर घर घर जाये ।
धीरे से मन भर भर जाये ।

पंछी का सच गांव कहां है
हवा से पूछो ठांव कहां है ।
पूछ लो प्रेमी के ही मन से,
मिलन का उस के पांव कहाँ हैं ।

चिन्ह ढूंढ़ता दर दर जाये ।
धीरे से मन भर भर जाये ।

गाने दो ।

मुक्त छन्द,
भाव द्वन्द

पाने दो ।
गाने दो ।

विरह रंग,
कलह ढ़ंग

छाने दो,
गाने दो

मधुर राग
किन्तु आग

आने दो,
गाने दो

गदराये गदराये,
कुछ खोये कुछ पाये ।

दाने दो,
गाने दो ।

मन माने मन का मनका लो टूट गया ।

बिसरे बिसराये मन भाया वह बेसर जो,
अंग ने छुआ नहीं गदराया केसर वह ।

जाने कौन आकर यहां मन को ही लूट गया ।
मन माने मन का मनका लो टूट गया ।

आकर नहीं जाओगे यह कैसे सम्भव है
जाकर नहीं आओगे यह कैसे सम्भव है ।

प्रणय राग वालों का नैहर लो छूट गया ।
मन माने मन का मनका लो टूट गया ।

चार दिन चार पहर चार दिशा देखो तुम,
क्षितिज से लिपटी वह आज निशा देखो तो

विधिवत विज्ञान का भण्डा ही फूट गया,
मन माने मन का मनका लो टूट गया ।

उस तरह तुम ही देखती रात भर,
जिस तरह चान्द तारे धरा देखते हैं।

बेबसी की कसम बेसहारे थे हम।
दूर होके भी प्रिय सच तुम्हारे थे हम।
गाते प्रणय के सहारे प्रगति कर गई,
जिन्दगी सहमती बस नहीं रह गई।

होट कटते नहीं नेत्र की मात पर,
जिस तरह मृग मराने हरा देखते हैं।

था दिशाओं ने मुझ से यही तो कहा,
बेल कटती गई और समय रह गया।
जब चले जगमगाने समय के दिये।
तब शिथिल गीत-चलते मलय ने कहा।

रात के नाम पर बात दे दो उन्हें,
जिस तरह कनखियों से जरा देखते है।

पहाड़ों के घर में पत्थर के पिंजरे,
लिये वह खड़ी जिसके हैं बाल बिखरे,
माथे की विंदिया और हाथों की मेंहदी,
कहीं रंग न छोडें वह माथे के अंचरे।

सगुन हो गया है समय से समय का,
इंगुर से माथा भरा देखते हैं।

जाने कौन गीत होठो पर स्वर को नाच नचाये ।

दिशा बोध का आज निमंत्रण,
ले जाता उस जंगल ।
वृक्षों के नीचे मैं बैठा,
भोग रहा युग मंगल ।

जाने कौन हवा आकर हां प्रिय की बात बताये ।
जाने कौन गीत होठों पर स्वर को नाच नचाये ।

बातो बातों में बातों की,
बात वन गई बैरी ।
इस जीवन को बात में लेके,
कहा था उसने है री ।

अपनापन के नये कोड़ पर सभी धरा रह जाये ।
जाने कौन गीत होठों पर स्वर को नाच नचाये ।

अब तो मन की कह लेने दो,
साथ दो कदम चल लेने दो ।
परबस कोई क्या कर लेगा,
हाथ को अपने मल लेने दो ।

रेखायें इन हाथों की आगे की बात बताये ।
जाने कौन गीत होठों पर स्बर को नाच नचाये ।

तुम आकर वह गीत सुना दो ।

दूर देश जाने वाले,
यह शालेयारा क्या याद न आता ।
स्वाँस फिसल जाते हाँ जल पर,
मछुहारा यह गया बताता ।

बैठ उसी नौका पर आ लो ।
तुम आकर वह गीत सुना दो ।

बाईं मेरी दाईं तेरी,
जब भी पलकें फड़क जाये तो ।
समझो प्यारे योग बन गया,
सिर का आंचल सरक जाये तो।

चान्द देखते नयन थका दो ।
तुम आकर वह गीत सुना दो ।

तुम से तो पत्थर बेहतर है,
जो कहने पर सुन लेता है ।
चन्द फूल चन्दन अच्छत से,
हो प्रसन्न मेरी गुनता है ।

आओ दूरी ताक पर रख दो ।
तुम आकर वह गीत सुना दो ।

तुम वह मुझको गीत सुनाना ।

परदेसी ने घर पर आकर,
अपने मन के बाग सजा कर।
टहनी के फूलों से सट कर,
बात किया था बात बना कर।

और अचानक रूठ गये थे,
बात हुई क्या मीत बता दो।

अरे अचानक दोपहरी में,
परछाई भी अलग हो गई।
थोड़ा कर विश्राम यहां पर,
बढ़ना आगे पहर कह गई।

आओ आकर कभी न जाओ,
ऐसा आकर प्रीत जता दो।

दुनियां में तुम कहीं भी जाना,
मेरे जैसा किसी को पाना।
लेकिन प्यारे सोच समझ कर,
प्रणय पंथ पर कदम बढ़ाना।

ठेस लगे तो रुक मत जाना,
मधुर मधुर वह गीत सुनाना।

शृंगार

बहती गयी गंगा छलकता गया जल,
कहती गयीं लहरें तू इन्सान चल।

देख मेरे जीवन में कितने झमेले,
नीची ऊंची धरती कहीं पत्थर और ढेले।

अंत जीत होती जो जीवन से खेले,
झूठी यह दुनिया और झूठे यह मेले।

पत्थर से टकरा के किस्मत बदल,
कहती गयी लहरें तू इन्सान चल।

बहती गयी गंगा छलकता गया जल,
कहती गयी लहरें तू इन्सान चल।

माथे पर हाथ धरे काम नहीं चलता है,
चिनतन से साथी रे खून सदा जलता है।

करतब से जीवन की खेती तू सींच,
उपकार करने में मत हाथ खींच।

कुदरत का आबाद तुझ से महल,
कहती गयी लहरें तू इन्सान चल।

बहती गयी गंगा छलकता गया जल,
कहती गयी लहरें तू इन्सान चल।

बनती मिटती दुनियां,
और उसमें कुछ बसे बसाये घर,
जिसमें रहते कुछ लोग,
एक जीवन बिता खत्म हुये।
इसी प्रकार बनता मिटता चलता रहा संसार,
दौड़ लगाता रहा युग,
लेकिन समय ने,
न जाने कब से चलना शुरू किया
कब तक चलता रहेगा,
पता नहीं ;

वैसे तो तेरे शहर में मशहूर हूँ मैं भी,
चाहे तो आके देख ले तू अपने ही घर को।

बरबाद या आबाद तो है बात समय की,
बेवजह क्यों तोड़े है तू अपने ही सर को।

कुछ और भी हैं लोग यहां तुझ को छोड़ के,
जो रास्ता बनाते हैं रोते नहीं दर को।

पैदाइशी तनहाँ था तेरा साथ मिल गया,
लेकिन तू किसी और की तनहा नही डर को।

कोई तो वक्त आये जो तुझ पे ही आजाये,
बे परदा नजर आये तू बस मेरी नजर को।

परवाज और भी हैं परिन्दों के एलावा,
बदनाम यूँ ही करते हैं दुनियां में अमर को।

होंठ हमारे उनका जाम,
याद न आये जिनका नाम ।

बहक गये हम उसके आगे,
बेतुक सा यह कैसा काम ।

चलो किनारे गिन ले लहरें,
कर लें अपनी रंगीं शाम ।

ओढ लो चादर दाग देख के,
बिना दाग का दूना दाम ।

इतनी अमर हिम्मत रखते हैं,
सख्त दिलों को कर लें राम।

थोड़ा चलकर ही जो थक गई जिन्दगी,
इतनी कमजोर क्यों हो गई जिन्दगी ।

बातों बातों में यह क्या से क्या हो गया,
बोलते बोलते चुप हुई जिन्दगी ।

मिलती जुलती रही दूर भी हो गयी,
और बिछड़ कर भी मिलती रही जिन्दगी ।

सच अगर पूछते हो तो इतना सुनो,
हंसते हंसते ही अपनी कटी जिन्दगी ।

था यकीन जिनका पुरवता अमल नेक था,
साथ उनका ही देती रही जिन्दगी ।

यूं तो जो भी बने बनके वह मिट गये,
पर अमर तेरे जैसे रही जिन्दगी ।

अपने हाथों पे लिये गम से भरा पैमाना,
किसने पटका है मेरे घर को समझ मैखाना ।
जिसकी खुशवू से सरावोर है अब वजम वसूल,
उसकी सूरत ही बनाती है उसको दीवाना ।
देख लो कंधे पे है उसका जनाजा अपना,
वह अब वाहिद है दुनियां को क्या अपनाना ।
जिसका कोई न हो हम सफर सफर के लिये,
उसके हर गाम को दुनियां कहेगी बुतखाना ।
तू अमर साज को अब छेड़ दे वीराने में,
कौन आयेगा तेरा सुनने यहां अफसाना ।

यूँ सोये दिन रात न जागें;
कोई कहे क्या इसके आगें ।

दो दिल तड़पें मिल जाने को,
बढ़ न सके क्या उनके आगें ।

हम से तो यह पत्थर बेहतर,
डटा हुआ है सबके आगें ।

प्रेम पुजारी पत्थर पूजे,
उसे न सूझे इसके आगे ।

जमीन आसमां यार अमर हैं,
पक्के इनके प्रेम के धागे ।

न जाने मुझे आज भला हो गया है क्या,
अपने ही दर पर आज मेरा खो गया है क्या ।

कैसे वह मेरा खो गया सच हासिले हेयात,
उसके निजाम में कहीं कुछ हो गया है क्या ।

करवट बदल बदल के किया नींद को तमाम,
बेचैनियों का चैन कहीं सो गया है क्या ।

रास्ते पर छूट गये साथ चलने वाले,
मेरे काफिले ये पहले कहीं वह गया है क्या ।

बे समझे अमर आप उन्हें क्या समझ बैठे,
इतनी भी रहम क्यों कर क्या रो गया है क्या ।

बेशक शक का दौर यही है,
रुका जो चलते ठौर यही है ।
परदे में भी आंख पर परदा,
देख सकें का तौर यही है ।
जाम उठाते वहीं जम गये,
ठंडी स्वांसों का कौर यही है ।
पतझड़ पतझड़ सूना सूना,
बे मौसम का बौर यही है ।
रुका वह कहते हकलाया भी,
अमर गरदिशी और यही है ।

प्यार के बीच में दाम कहां से आया,
चलने के बीच में शाम कहाँ से आया ।

इस धरा पर जो चलते है चलने के लिये,
उनकी मंजिल पे कोई काम कहां से आया।

अपने दामन को जो अश्कों से ही नम कर लें,
उनके होठों के लिये जाम कहां से आया।

वह गुनह गार गुनाहो को देवता भी है
बेतकल्लुफ सा कहो नाम कहाँ से आया।

चलते चलते जो थक गया हो अमर,
रुबरु उसके कोई गाम कहां से आया ।

हम खबरदार उस खबर से रहे,
जिसके सम्बन्ध अपने घर से रहे ।

हमने उसमें ही मसलहत समझी,
बा खबर हो के भी खबर से रहे ।

जाते जाते यह कह गया चन्दा,
आप क्यों आज इतना डर से रहे ।

कुछ न कुछ काम वह भी आये हैं,
जो जमाने में मुख्तसर से रहे ।

ऐ अमर कुछ असर न उनपे हुआ,
सारे जुमले ही वे असर से रहे ।

किसी की बात को ऐसे नही छुपाते हैं,
जैसे कि आग को जल्दी से बुझाते हैं ।

जाने वाला कोई मुरीद नहीं,
जनाजा वक्त का सोच के उठाते हैं ।

उस पे नही खुद पर तुम रहम कर लो,
काना फूसी में नही बात को सुनाते है ।

आखिर पूरवा पछवां के साथ चल ही पड़ी
दर्द के मारों का इतना नहीं उड़ाते हैं ।

खाक अब दौड़ेगा चलने वाला,
अमर जमीन में जब अँगुलिला चुभाते हैं ।

नदी किनारे मेरा घर है,
फिसल न जाऊं इसका डर है ।

कुटने वाला वह ओखल है,
जिसमे फंसा हमारा सर है ।

वन्दों से है खुदा पूछता,
यही तेरे मसजिद का दर है ।

चाक चाक है उसका दामन,
मस्ती में जो यूँ ही तर है ।

अमर उन्हे तुम अपना कह लो,
दुनियां का लावारिश हर है ।

चोट दानिशता उसने खाया है,
कल जो तेरे घर आया है ।

नये सिरे की एक कहानी लेकर,
कहने को वह मेरे सर लाया है ।

अब वह अपने को वफादार भी बताता है,
साथ में रहने को अपना ही घर लाया है ।

बाखुदा आज तक देखा नही तेरे जैसा,
एक से एक रिझाने को हर लाया है ।

आप भी साथ में इसके बैठ जायें अमर,
शायद तनहा है और ऊबकर आया है ।

मिट्टी का बना आदमी,
पत्थर के बने घर ।
अपने यकीन की पूजा में,
न जाने क्या क्या करता है ।
दूसरों को पूजने वाला,
कितना कमजोर मजबूर होता है ।
खुद को नहीं पूछता,
भावना की धारा में ।
यूं ही बह जाता है,
जाते जाते भी यही कह जाता है,
मिट्टी का बना आदमी ।

मैं ने,
कई खेल खेले ।
कई खेल देखे,
समझना कठिन था ।
कौन सा मेरा,
कौन सा तेरा ।
क्यों कि दोनों ही,
मेरा था दोनों ही मेरा था ।
फिर भी यह प्रश्न,
कौन सा मेरा कौन सा तेरा ।
बार बार उमरा है उमरेगा ।

चित्रों के पास एक चित्र,
उस चित्र के पास एक चित्र।
चित्रों के चरित्र में,
एक नया चित्र।
ऐस तो नहीं,
चरित्र के चित्र में तुम।
और तुम के चरित्र में मैं,
कितना सुन्दर है।
यह अपनों का चित्र,
अपना चित्र।

यह शहर नहीं,
किस्मत का बाग है।
फैशन का आग है,
बाग के पेड़ों से ।
किस्मत टपकता है,
सड़कों पर बद किस्मत भटकता है।
सामने पड़ी चीज,
जिसे नहीं दिखती ।
ओ रख वालो,
उन्हे देखो, रास्ता बताओ ।
यही आस्वासन भी था,
लेकिन क्यों ? तुम मौन हो ।
क्या यह शहर नहीं ?

शृंगार

अनगिनत लोगों के बीच,
खुद को नहीं पहचान सकना,
खो देना अपनी प्रतिमा,
लगा लेना छाती से,
औरों का प्रभाव ।
थोड़ी देर बाद,
जब चले जाये लोग ।
तब तलाश ना अपने को,
पाना औरों का प्रभाव ।
और व्यथित हो उठना,
पुनः तलाश ना अपने को ।

आकाश,
पानी बरसाता है,
तारे चमकाता है
सूर्य और चन्द्रमा को पनपने का स्थान देता,
सदा दूसरे के काम आता है।
बात क्या है,
क्या उसका अपना कोई नहीं ?
या वह मसीहा है।

पर काटने वालों से,
सावधान ।
उड़ो मगर पंख न खोलो,
वरना कट जायेगा ।
जो जहां वहीं रह जायेगा,
रक्षक एक भी नहीं ।
हर, अपनी फटी उससे सिलेगा,
रिश्वत देने पर ही माया की बाजार खुलती है।
फिर भी दया की भीख नहीं मिलती है
हर भागता चीखता यही कहता मिलेगा
पर काटने वालों से, सावधान ।

रात का वक्त है,
समझ कर कदम रखना,
बूझ कर कुछ कहना,
वरना आवाज बहक जायेगी।
जो नहीं कहा,
वह भी कह जायेगी।
रात का वक्त है।

शहर की अवस्था खराब है
पानी छान कर पीना,
मगर सुना है
इसी शहर के लोग,
चन्द्रमा में पहुँच चुके।
इस लिये ध्यान से जीना,
चान्दनी भी छान के पीना।
क्योंकि आज का आदमी पहुँच चुका है,
वह आदमी यहीं है।
और शहर की अवस्था खराब है।

आज की कविता में,
कवि नहीं,
वक्त बोलता है,
बन्द समय का द्वार खोलता है।
कविता का प्रत्येक शब्द,
मेरे ख्याल से मुझे नहीं,
मेरे कहे को समझता है।
तुम भी बूझो उसे,
जो समझना है।
प्रत्येक समझ एक पृष्ठ है,
जिस पर लिखा है।
इतिहास आज का,
समय का।

यह सड़क दिल्ली जा रही,
तुम भी चल दो,
साथ पहुँच जाओगे ।
चलते रास्ते पर,
कुत्ते अवश्य भोंकेगे,
मगर डरना मत,
वह केवल कुत्ते हैं,
केवल भोंकते हैं ।
चलते चलो,
पहुंच जाओगे,
यह सड़क दिल्ली जा रही ।

हर पत्थर चिन्ह है,
इतिहास का।
चाहे जिस परिस्थिति में हो,
आस्था है विश्वास को।
देखने वालो,
उसे देख अवहेलना मत करो।
पत्थर एक चिन्ह है,
इतिहास का।